: प्रथम अध्याय :

रांगेय राघव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

: प्रथम अध्याय :

रांगेय राघव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

अ- व्यक्तित्व

(1) वंश परम्परा और परिवार

वंश परम्परा

जन्मतिथि, स्थान और नाम

(2) पारिवारिक संस्कार

माता-पिता

भाई

सेवक श्रवणकुमार

आयंगार परिवार से रिश्ता

(3) शिक्षा और कार्य

(4) व्यक्तित्व के पहलू

(5) साहित्य लेखन योजना

ब- कृतित्व

(1) प्रेरक तत्व

(2) प्रथम रचना

(3) रचनाओं की सूची

क -निष्कर्ष

: प्रथम अध्याय :

रांगेय राघव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

अ- व्यक्तित्व -

डा. रांगेय राघव हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध लेखकों में से एक है। उनका विपुल साहित्य देखकर उन्होंने कहानियों का जो लेखन किया है वह कम मात्रा में है। उनके साहित्य में शोषितों पीडितों के प्रति अपनेपन की भावना दिखाई देती है। डा. रांगेय राघव साहित्य के अतिरिक्त चित्रकला, संगीत और इतिहास/पुरातत्व में विशेष रूचि रखते थे। साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में वे सिद्धहस्त थे। अद्भुत प्रतिभा, असाधारणज्ञान और लेखन क्षमता में वे अद्वितीय थे। उन्होंने आजीवन स्वतंत्र लेखन और कठिन संघर्ष किया। डा. रांगेय राघव का दृष्टिकोण प्रगतिशील था। इस दृष्टिकोण से वे अपने युग एवं जीवन की समस्याओं की ओर देखते थे।

1. <u>वंश परम्परा और परिवार</u> :-

डा. रांगेय राघव के पूर्वज मूलत: दक्षिणात्य थे। वहाँ से वे मथुरा आए। जयपुर के महाराज ने उन्हें `वैर` की जागीर दें दी और यही वे बस गए। दक्षिण भारत से वैर (भरतपुर-राजस्थान) आते समय अपने साथ अराध्य देवता को लेकर आए और मन्दिर बनाकर `सीतारामजी` की मूर्ति की प्रतिष्ठा की। उस मन्दिर की देखभाल रांगेय राघव के बड़े भाई श्री टी. एस. के. आचार्य आज भी करते हैं। याने डा. रांगेय राघव का परिवार उस मन्दिर का मालिक है।

``डा. रांगेय राघव के पूर्वजों का क्रम निम्नानुसार है ।-

श्री निवासाचार्य

श्री वीरराघवाचार्य

श्री वरदाचार्य

श्री नारायणाचार्य

श्री विजयराघवाचार्य

श्री रंगाचार्य

1- श्री टी. एस. एल. आचार्य

2- श्री टी. एन. के. आचार्य

3- श्री टी. एन. व्ही. आचार्य`[1]

अत: सातवी पीढी में रांगेय राघव हुए है। इनके पूर्वज भी लेखन कार्य करते थे। पूर्वजों की लिखित अनेक तामिल और संस्कृत ग्रंथो की पांडु लिपियाँ आज भी `वैर` में उनके घर में सुरक्षित है।

जन्मतिथि स्थान और नाम -

डा. रांगेय राघव का जन्म 17 जनवरी, 1923 में प्रात: चार बजे आगरा में हुआ। आगरा में इनका घर बाग मुजफ्फरखाँ मोहल्ले में श्री बागेश्वरनाथ जी के मन्दिर के पास है। घर के पास पीपल का वृक्ष है। आगरा के मोहल्ला बाग मुजफ्फरखाँ से गुजरनेवाले सड़क के मार्ग पर श्री बागेश्वरनाथ जी के मन्दिर की बगल में आगरा नगरपरिषद की ओर से एक फलक लगा हुआ है। उस पर `डा. रांगेय राघव मार्ग` लिखा है। इस फलक को उनका स्मृतिचिह्न मान सकते है। इस समय वहाँ एक दुकान है, उसका नाम है `आसाराम बलदेवदास एण्ड सन्स`। ``इस सम्बन्ध में रांगेय राघव के परिवार से सम्बन्धित श्यामा कहारिन ने जानकारी दी कि इसी घर में रांगेय राघव का जन्म हुआ था।``[2]

बाद में उन्होंने घर बदल दिया। आज `तिलक कमर्शियल ईंस्टीटयूट` है, वही पर उनका

---

1. डा. कमलाकर गंगावणे-कथाकार रांगेय राघव : जीवनी एवं व्यक्तित्व, पृ. 18

2. वही, पृ. 18-19

कुछ वर्षों तक कार्यक्षेत्र रहा।

नाम :-

अध्ययन के अनुसार जन्म कुंडली के आधार पर डा. रांगेय राघव जी के दो नाम बताए जाते है।

1- तिरूमल निम्बाकम राममूर्ति आचार्य।

2- तिरूमल निम्बाकम वीरराघव आचार्य।

किन्तु ``रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ` पहला भाग- `डा. रांगेय राघव` इस शीर्षक में रांगेय राघव का नाम `तिरूमल्लै नम्बाकम वीर राघव आचार्य है।``[1]

रांगेय राघव का मुलनाम श्री टी. एन. व्ही. आचार्य परन्तु उनके घर और मित्रों में उनका प्यार का नाम पप्पू था। `रांगेय राघव` यह उनका साहित्यिक नाम है। उनके पिता का नाम था-रंगाचार्य, जिससे बना `रांगेय` अर्थात रंगाचार्य का पुत्र और रांगेय राघव ने अपना नाम `वीर राघव आचार्य `का संक्षेप किया-`राघव`। रांगये और राघव दोनों के मिलने से बना हुआ नाम है-`रांगेय राघव`। कुछ लोग उन्हें आचार्य एवं स्वामी भी कहते थे। लेकिन इन नामों का अधिक प्रचलन न रहा। वैर के लोग उन्हें स्वामीजी, छोटे महाराज या भैयाजी आदि आदरनामक संबोधन से पुकारा करते थे। साहित्यिक जीवन में पदार्पन करने के बाद उन्होंने कवि मित्र भारतभूषण अग्रवाल के सुझाव पर ध्यान देकर अपना संक्षेप नाम `रांगेय राघव` रखा।

2. <u>पारिवारिक संस्कार</u> :-

डा. रांगेय राघव का परिवार सुसम्पन्न तथा सुसंस्कृत था। रांगेय राघव के पिता श्री रंगाचार्य `वैर` के जागीरदार और सीतारामजी के मन्दिर के मालिक थे। रांगेय राघव पर इन संस्कारों का

1.रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग 1 सम्पा- अशोक शास्त्री `डा. रांगये राघव` इस शीर्षक से प्राप्त।

प्रभाव पडा है। परिवार के सदस्यों के जीवन में इन संस्कारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

पिता :-

श्री रंगाचार्य संस्कृत के विद्वान थे। वे एक श्लोक का अर्थ तीन दिन तक भिन्न-भिन्न रूपों में समझाते थे। वे फारसी के ज्ञाता थे और उसमें शायरी भी करते थे। संस्कृत के विद्वान होने के कारण वे काव्यशास्त्र का खास ज्ञान रखते थे। वे रांगेय राघव को पिंगलशास्त्र पढ़ने का आग्रह करते थे। यहाँ रांगेय राघव के व्यक्तित्व के निर्माण में उनके पिता के संस्कार दिखाई देते है।

माता :-

डा. रांगेय राघव जी की माताजी का नाम कनकवल्ली था। वह सीधी, सरल और सुसंस्कृत महिला थी। वह ब्रजभाषा और साहित्य में विशेष रूचि रखती थी। वह तामिल, कन्नड भाषा जानती थी। डा. रांगेय राघव के व्यक्तित्व के निर्माण में उनके माता के संस्कार पाए जाते है।

भाई :-

रांगेय राघव सबसे छोटे थे। रांगेय राघव के दो बड़े भाई थे। पहले श्री टी. एन. एल. आचार्य और दूसरे श्री टी. एन. के. आचार्य। उन्हें `इंदिरा` नाम की एक छोटी बहन थी। परन्तु वह डेढ़ साल के शैशव काल में ही चल बसी। डा. रांगेय राघव परिवार में सबसे छोटे होने के कारण परिवार के सभी सदस्यों का स्नेह उन्हें प्राप्त हुआ।

सेवक श्रवणकुमार :-

श्रवणकुमार रांगेय राघव के परिवार में सेवक था। श्रवणकुमार ने 13 वर्ष तक उनके परिवार की सेवा की। रांगेय राघव श्रवणकुमार के साथ सेवक की अपेक्षा भाई जैसा व्यवहार करते थे। वे श्रवणकुमार को `सरनम` नाम से पुकारते थे। सरनम रांगये राघ्याव की मौत के समय भी मुंबई में उनके पास था। श्रवणकुमार के मन में रांगेय राघव के प्रति अपार श्रद्धा थी। इसीलिए उसने वैर मे सन 1974 में `डा. रांगेय राघव अध्ययन केन्द्र` की स्थापना की और आज भी वह केन्द्र कार्य कर रहा है।

आयंगार परिवार से `रिश्ता :-

डा. रांगये राघव हिंदी भाषा एवं साहित्य की सेवा करने हेतु विवाह के इच्छुक नहीं थे। फिर भी सामाजिक एवं पारिवारिक दबाव उनपर पड़ रहा था। वे 33 वर्ष तक अविवाहित रहे।

एक बार रांगेय राघव मुंबई में श्रीकृष्ण स्वामी आयंगार के परिवार में लड़की देखने आये थे। वहाँ इन्होंने श्रीमती सुलोचनाजी की बड़ी बहन श्रीमती शकुंतलाजी को देखा। किन्तु स्वयं को अयोग्य समझकर उन्होंने अपने बड़े भाई श्री टी. एन. एल. आचार्य और शकुंतलाजी आयंगार का सन 1954 में विवाह सम्पन्न हुआ। सन 1955 के दिसम्बर में प्रथम बार श्रीमती सुलोचनाजी अपनी माँ के साथ, बड़ी बहन श्रीमती शकुंतलाजी से मिलने हेतु `वैर` आयी थी। वही रांगेय राघवजी ने श्रीमती सुलोचनाजी को समीप से देखा-परखा और समझा। वहाँ परस्पर वार्तालाप के भी कई प्रसंग आए। ``जब उन्होंने सुलोचनाजी के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखा तब सुलोचनाजी ने मौन स्वीकृति दी। अन्तत: दोनों की पारस्पारिक निष्ठा सफल हुई और 1 मई, 1956 को माटुंगा मुंबई में उनका विवाह सम्पन्न हुआ।``[1]

बाद में आयंगार परिवार जुनागढ़ छोड़कर बोर्डी (महाराष्ट्र राज्य) में आकर बस गया। सन 1950 में अपने बड़े भाई श्री ए. के. एस. आयंगार के साथ श्रीमती सुलोचना मुंबई आयी। उनकी हाईस्कूल की शिक्षा कुर्ला के होली क्रांस स्कूल में हुई। उन्होंने सन 1956 में हाइस्कूल की परीक्षा पास की और इसी वर्ष उनका विवाह भी हुआ। मराठी के मानवतावादी लेखक श्री साने गुरूजी से शिक्षित होने का उन्हें सुअवसर मिला। साहित्य तथा कला की उन्हें अच्छी परख थी। उनकी इच्छा थी कि, ऐसे व्यक्ति से विवाह हो जो वास्तव में महान कलाकार हो। उनका सपना साकार हुआ।

श्रीमती सुलोचना जी की विवाहपूर्व शिक्षा हाईस्कूल तक हुई थी। विवाह के बाद रांगेय राघव की प्रेरणा से उन्होंने `रामनारायण रूईया कालेज` माटुंगा, मुंबई में बी. ए. तक की शिक्षा पाई। रांगेय राघव की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में समाजशास्त्र में एम. ए. किया।आज जो पद और प्रतिष्ठा श्रीमती सुलोचनाजी ने पाई है, उसका वास्तविक प्रेरणाश्रोत डा. रांगेय राघव ही थे।

---

1. कथाकार रांगेय राघव- डा. कमलाकर गंगावणे, पृ. 21

3. <u>शिक्षा और कार्य</u> :-

डा. रांगेय राघव का प्रधान कार्यक्षेत्र, लेखन तथा अध्ययन है। रांगेय राघव ने एक सच्चे ज्ञानसाधक के रूप में शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने विश्वविद्यालय की उच्चत्तम उपाधि पीएच. डी. भी प्राप्त की।

शिक्षा :-

डा. रांगेय राघव की शिक्षा आगरा में हुई। प्रारंभ में हाईस्कूल तक की शिक्षा सेन्ट जान्स स्कूल और विक्टोरिया स्कूल में हुई। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद उन्होंने सेंट जान्स कालेज में एम. ए. तक का अध्ययन किया। वे 1944 में एम. ए (हिंदी) हुए। रांगेय राघव ने पीएच. डी. उपाधि आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त की। इनके शोध-प्रबन्ध का विषय `भारतीय मध्ययुग के सन्धिकाल का अध्ययन (श्री गुरू गोरखनाथ और उनका युग) था।` यह कार्य उन्होंने श्री डा. हरिहरनाथ टण्डन के निर्देशन में सन 1948 में पूर्ण किया।

अन्य विषयों का अध्ययन :-

डा. रांगेय राघव अत्याधिक परिश्रमी थे। उनमें 18 घंटे निरंतर कार्य करने की क्षमता थी। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। रांगेय राघवजी को साहित्य के अतिरिक्त संस्कृत, चित्रकला, संगीत और इतिहास-पुरातत्व में विशेष रूचि थी। साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में वे सिद्धहस्त थे।

कार्य :-

डा. रांगेय राघवजी ने किशोरावस्था में लेखन आरंभ किया था। 19-20 वर्ष की अवस्था में अकालग्रस्त बंगाल की यात्रा की। लौटकर हिंदी के प्रारंभिक पर अविस्मरणीय रिपोर्ताजी `तुफानों के बीच` का सृजन किया। 23-24 वर्ष की आयु से ही वे हिंदी जगत में अभूतपूर्व चर्चा के विषय बने। मई, 1947 में प्रथम कहानी संग्रह `साम्राज्य का वैभव` का प्रकाशन हुआ। `मेरी प्रिय कहानियाँ`, `चमन`

सहित कुल ग्यारह कहानी संग्रह प्रकाशित हुए। अनेक कहानियाँ भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुदित हो गई।

डा. रांगेय राघव का संबंध आगरा से घनिष्ट रहने के कारण यही से अपनी रचनाओं के लिए सामग्री का संकलन किया था। आप शोध प्रबन्ध पूर्ण करने के हेतु, सामग्री इकट्ठी करने के लिए वाराणसी गए। ``शान्तिनिकेतन के स्वस्थ वातावरण में उन्होंने आगरा के स्थानिय हिंदी दैनिक `संदेश` में सम्पादन कार्य किया।``[1]

सन 1946 में उन्होंने द्वैमासिक `निर्माण` का सम्पादन कार्य सम्हाला। सन 1948 में आगरा विश्वविद्यालय से उन्हें पीएच. डी. की उपाधि मिली। सन 1952 में रांगेय राघव अपने मित्र प्रोड्युसर श्री सत्यपाल शर्मा के साथ सिने जगत में कार्य करने हेतु मुंबई पहुँचे। वहाँ उन्होंने कुछ फिल्मों की कथा लिखी। जिनमें से एक `लंकादहन` पर फिल्म भी बन गई।

लम्बे समय तक अविवाहित रहने के बाद रांगेय राघव ने 7 मई, 1956 को सुलोचना आयंगार से विवाह किया। 8 फरवरी, 1960 को पुत्री सीमान्तिनी का जन्म हुआ। सन 1961 में रांगेय राघव पर कैंसर का भीषण आक्रमण हुआ, कोई निदान नहीं हुआ। आखिर 12 सितम्बर 1962 को उनकी मृत्यु हुई। इस प्रकार रांगेय राघव ने अपना अधिकांश जीवन आगरा, वैर और जयपुर में व्यतीत किया। आजीवन स्वतंत्र लेखन और कठिन संघर्ष को झेला। यही उनके जीवन की शोकान्तिका है।

4. व्यक्तित्व के पहलू :-

डा. रांगेय राघव अद्भूत प्रतिभावान सर्वमान्य लेखक थे। उनका व्यक्तित्व विविध पहलूओं से आकर्षक बन गया था।

शरीर सौष्ठव :-

डा. रांगेय राघव का व्यक्तित्व मनमोहक एवं आकर्षक था। गौरवर्ण, उन्नत ललाट और

---

1. डा. कमलाकर गंगावणे-कथाकार रांगेय राघव, पृ. 26

सुगठित सुकुमार शरीर था। उनकी आँखे और अँगुलियाँ अद्भूत थी।आँखे विशाल और आभा से दीप्त थी। उनमें मोहना शक्ति बसी हुई थी, जो देखनेवालों को मंत्रमुग्ध करती थी। रांगेय राघव के व्यक्तित्व पर उनके मित्र डा. कुन्दलाल उप्रेति ने इस प्रकार शब्दबद्ध किया है - ``लम्बा शरीर, साफ चेहरा, उन्नत और स्निग्ध ललाट, लम्बी एवं नुकीली नाक, नक्काशी की हुई मुख्याती भवें, सतेज विशाल नेत्र (जिनमें कभी-कभी शरारत भी बहक जाती थी।) पतले-पतले गुलाबी नाजुक ओठ और ठोठी। सरिता की गंभीर भँवेरां को समेटते हुई।यह सबकुछ मिलकर ही तो इंद्रधनुष्य बनता है और वह इन्द्रधनुष्य ही था। ऐसी सौम्य, शालीन मुखाकृति एक नवीन सृष्टि रही थी। मानो तामिलनाडू और व्रजभूमि की छपि ने एकाकार होकर एक नवीन व्यक्तित्व की सृष्टि हो।``[1] उनका यह सौष्ठन मृत्यु तक जैसे के वैसे ही रहा।

वेशभूषा :-

रांगेय राघव की वेशभूषा सामान्य थी। ``छात्रदशा में वे शर्ट और पतलून पहनते थे। बाद में वे कुर्ता और पाजामा या धोती पहनने लगे। पैरों में चप्पल रहती थी। जाड़े के दिनों में वे शाल का उपयोग भी करते थे, कभी -कभी शेरवानी और अचकन पहनते थे। सिर पर टोपी और अधिक ठण्ड पडने पर गले में मफलर लिया करते थे, धोती के पटल का एक सिरा हाथ में थामे मंदमंद एक सी चाल चलना उनको भाता था।उनकी इस चाल की ओर लोग ध्यान से देखते थे। पड़ोसी तक इसमें रूचि लेते थे।``[2]

प्राय: वे दाढ़ी- मूँछ साफ करते थे। यदि कोई सनक सवार हुई तो दाढ़ी-मूँछ बढ़ा लेते थे।

अभिरूचि :-

रांगेय राघव प्रकृति का सौन्दर्य लेखन करने में बड़े कुशल थे। वे हमेशा प्रकृति में रूचि लेते और घुमते वक्त मित्रों को अपनी ओर आकृष्ट करते रहते। समाज में उन्हें मौलिक स्थान था। वे मित्रों के यहाँ अपना समय गँवाते थे। आगरा में तीन रेस्तराँ ऐसे है जहाँ वे प्राय: जमा करते थे। उनके नाम है-

---

1. डा. कमलाकर गंगावणे- कथाकार रांगेय राघव, पृ. 27
2. वही, पृ. 27-28

दरोगा, नापा, गोवर्धन। इनके अतिरिक्त उनका प्रिय रेस्तराँ बाग मुजफ्फरखाँ मोहल्ले के बाबू नत्थीलाल का था। वह एकदम सामान्य रेस्तराँ था। उनका यह प्रिय रेस्तराँ सन 1949 के आसपास बंद हो गया। रांगेय राघव ने अपने लेखन के लिए रेस्तराओं से सामग्री प्राप्त की। वे जहाँ भी जाते थे, वही उनका किसी एक सामान्य रेस्तराँ से लगाव हो जाता था।

रांगेय राघव धुम्रपान के आदि थे। उनका एकमात्र व्यसन था-सिगरेट पीना। वे लगातार सिगरेट पीते थे। कई बार वे एक साथ दो-दो सिगरेट जलाकर पीते थे। परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में वे सिगरेट पीते थे। इसमें उनके मित्र भी सम्मिलित होते थे। बाद में कैंसर से पीड़ित होने पर भी उनकी सिगरेट नहीं छुटी। डाक्टर के मना करने पर भी वे चोरी-चोरी सिगरेट पीते थे। पत्नी तथा स्नेहियों के अनुरोध और आग्रह को उन्होंने सदैव टाला। वे अपने साहित्य सेवी मित्र मण्डली के साथ प्रसंगोचित बौद्धिक व्यंग विनोद करते थे। उनमें श्री राजनाथ शर्मा, डा. कुन्दलाल उत्प्रेति, डा. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, डा. घनश्याम अस्थाना, डा. रामविलास शर्मा इनके व्यंग्य विनोद के लक्ष्य बनते थे।

5. साहित्य लेखन-योजना :-

डा. रांगेय राघव ने प्रचुर भाषा में साहित्य लेखन किया है। वे हमेशा अध्ययन करके उस आधार पर पहले योजना बनाते थे। बाद में वे साहित्य लिखते थे।

``मानसिक थकान की स्थिति में वे मनोरंजनात्मक साहित्य का अध्ययन करते थे। मनोरंजनात्मक साहित्य में बाबू देवकीनंदन खत्री की `चंद्रकांता संतति` विशेष रूप से पढ़ते। वह उनका प्रिय ग्रंथ था। वे शौच के समय भी शौचालय में पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ लेते थे। उन्होंने शौचालय को दैनिक वाचनालय का रूप दिया था। बिना पुस्तक के उनका कोई नित्यक्रम पूर्ण नहीं होता था।``[1]

इस प्रकार मृत्यु के साथ संघर्ष करते-करते अन्त में 11सितम्बर 1962 की सुबह उनकी हालत अत्यंत गंभीर हुई और सारे प्रयत्न के बावजूद बुधवार 12 सितम्बर, 1962 को सायं 4 बजे उनका देहावसन हो गया। मृत्यु के समय इनकी आयु केवल 39 वर्ष की थी। मृत्यु के बाद मुंबई में ही क्वीन्स रोड स्थित चन्दनवाडी सोनापुर के स्मशान में उनका दाहसंस्कार किया।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग1, सम्पा-अशोक शास्त्री, सम्पादकीय पृष्ठ से उद्धृत

ब- कृतित्व

डा. रांगेय राघव ने अल्पायु में ही विपुल साहित्य का निर्माण किया है। उनकी रचनाओं में सम्पूर्ण विषय शाखाओं को साहित्यगत रूप देकर परिचित कराने का प्रयास किया गया है। साहित्येत्तर विषयों की ओर भी उन्होंने ध्यान दिया है।

डा. रांघेय राघव ने स्वयं तैयार की हुई अपनी रचनाओं की सूची यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। इन रचनाओं के अतिरिक्त अन्य प्रकाशित अप्रकाशित रचनाओं का साहित्यगत परिचय क्रम से दिया जा रहा है।

1. प्रेरक तत्व :-

रांगेय राघवजी के साहित्यकार रूप का प्रेरक तत्व अपने परिवार के सदस्यों से रांगेय राघवजी ने कुछ-न-कुछ सीखा है। उन्के पूर्वजों में से कोई-न-कोई सदस्य किसी-न-किसी कला में निष्णात रहा है। पारिवारिक सदस्योंकी कलात्मक अभिरूचियों तथा उनके वंशगत संस्कारों का विवरण इसप्रकार है-

``नाना-उनके नाना एक चित्रकार और एक कुशल वीणावादक भी थे।

मामा- उनके मामा कुशल मृदंगवाद्‌थे।

माता- उनकी माता साहित्यिक अभिरूचि रखनेवाली महिला थी।

पिता- उनके पिता संस्कृत के साहित्यकार थे।``[1]

प्रथम रचना :-

रांगेय राघवजी के सृजनात्मक कार्य का आरंभ सन 1937 के आसपास 14 वर्ष की अवस्था में हुआ। छात्र जीवन में ही उन्होंने लिखना आरंभ कर दिया था। उनकी प्रथम रचना जो एक गीत

---

1. सम्पा. अशोक शास्त्री-`ग्यारह कहानी संग्रह` शीर्षक संकलन-डा. रांगेय राघव के कहानीसंग्रह के प्रथम भाग से सम्पादकिय पृष्ठ से उद्धृत।

थी - `साप्ताहिक विश्वमित्र` कलकत्ता से प्रकाशित होनेवाली पत्रिका में छापी थी। इसी काल में उन्होंने पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित होकर `बोलते खण्डहर` और सन 1938 में `अंधेरे की भूल` नामक रचनाएँ लिखी। द्वितीय विश्वयुद्धएवं रुस की क्रान्तिपर आधारित `अजेय खण्डहर` (काव्यसंग्रह) तथा `साम्राज्य का वैभव` (कहानी संग्रह) नामक दो संकलन प्रकाशित किए। इसी वर्ष `प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड` लिखी। `तूफानों के बीच` (रिपोर्ताज) `विषादमठं` (उपन्यास) `हंस` में उनकी रचनाएँ छपी है। सन 1948 में उनका प्रथम मौलिक उपन्यास `घरौंदे` प्रकाशित हुआ। `घरौंदे` से `आखरी आवाज` तक वे लगातार लिखते रहे है।

3. रचनाओं की सूची :-

रांगेय राघवजी ने अपनी रचनाओं की सूची स्वयं तैयार की है। यह सूची पत्नी सुलोचना राघव द्वारा डा. कमलाकर गंगावणे जी को प्राप्त हुई है। डा. कमलाकर गंगावणे जी के `कथाकार : रांगेय राघव` इस शीर्षक में जो सूचीक्रम दिया है, वही सूची दी जा रही है। वह इस प्रकार है ः

क्रम	रांगेय राघव द् वारा रचनाओं की तैयार की गई मुल सूची	रचनाओं के संबंध में विवरण
1	विजजियनी	यह पुस्तक विनोद पुस्तक मंदिर आगरा से छपी है।
2	इन्द्रधनुष्य	वही
3	संस्कृति और समाजशास्त्र भाग-1 `ग्रो` भाग- 2	यह पुस्तक श्री गोविंद शर्मा के सहयोग से लिखी गई है। मुल सूची में `गो` का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है।
4	संस्कृति और मानवशास्त्र गो	वही
5	अपराधशास्त्र, श्या:	यह पुस्तक श्री श्याम शर्मा के सहयोग से लिखि गई है। मुल सूची में `श्या` का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है।
6	सामाजिक समस्याएँ और विघटन-श्या	वही
7	सामाजिक समस्या और रितिरिवाज-मु	यह पुस्तक श्री मुरारी प्रभाकर के सहयोग से लिखी गई

		है। मुल सूची में `मु` का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है।
8	महाकाव्य विवेचन	यह पुस्तक विनोद पुस्तक मन्दिर से छपी है।
9	काव्य, यथार्थ और प्रगती	वही
10	समीक्षा और आदर्श	वही
11	बन्दूक और बीन	वही
12	बौने और पायलफूल	वही
13	मेरी भव बाधा हरौ	वही
14	रत्ना की बात	वही
15	लाई का ताना	वही
16	लखिमा की आँखे	वही
17	जब आवेगी काली घटा	वही
18	धूनी का धूँआ	वही
19	काव्य कला और शास्त्र	वही
20	देवकी का बेटा	वही
21	यशोधरा जीत गई	वही
22	भारती का सपूत (RPSD)	RPSD` का संकेत राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली के लिए है।
23	तुफान	टेमपेस्ट (शेक्सपियर)
24	एक सपना	अ मीड्ड समर नाईट-ट्रीम शेक्सपियर।
25	परिवर्तन	टेमिंग ऑफ दि शेक्सपियर
26	तिल का ताड	मच एडो अबाउट नथिंग शेक्सपियर।
27	भूलीभूलैया	दी कॉमेडी ऑफ इरार्स शेक्सपियर।
28	निष्फल प्रेम	लव्हज लेबर्स लास्ट शेक्सपियर।

29	बारहवीं रात	ट्वैल्थ नाईट शेक्सपियर।
30	जैसा तुम चाहो	एज यू लाईक इट शेक्सपियर।
31	वैनिस का सौदागर	मर्चैंट आफ वेनिस शेक्सपियर।
32	रोमियों ज्यूलियट	रोमियों एण्ड ज्युलियट-शेक्सपियर।
33	ज्यूलियस सीजर	जूलियस सीजर शेक्सपियर।
34	सम्राट लियर	किंग लियर-शेक्सपियर।
35	मैक बेथ	मैक बेथ-शेक्सपियर।
36	हेमलेट	हेमलेट शेक्सपियर।
37	आथेलो	आथेलो शेक्सपियर।
38	मुद्राराक्षस	मुद्राराक्षस-विशाखादत्त।
39	मृच्छकटिक	मृच्छकटिक-शुद्रक।
40	मन के बन्धन	लायालिटिज-गाल्सवर्दी।
41	दशकुमार चरित	दशकुमारचरित दण्डी।
42	संसार के महान उपन्यास	इस पुस्तक में विश्व साहित्य के श्रेष्ठ उपन्यासों का संक्षिप्त कक्षासार दिया है।
43	नकली उपग्रह राकेट और बाहरी आकाश	स्पेस-वायती ले यह पुस्तक ज्ञान-विज्ञान माला के अन्तर्गत `राकेट की कहानी` शीर्षक से छपी है।
44	मेरी प्रिय सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ	यह रचना उनके जीवनकाल में नहीं छपी।
45	आधुनिक हिंदी कविता में प्रेम और शृंगार	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली से छपी है।
46	आधुनिक हिंदी कविता में विषय और शैली	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
47	पाँच गधे	वही
48	बन्धन मुक्ता	इस रचना की पाण्डुलिपि श्रीमती सुलोचना राघव ने

		प्रकाशनार्थ राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली के पास दी है।
49	पक्षी और आकाश	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली से छपी है।
50	राह न रूकी	वही
51	राई और पर्वत	वही
52	पथ का पाप	वही
53	छोटी सी बात	यह पुस्तक हिंदी पाकेट बुक्स प्रा. लि.दिल्ली से छपो है।
54	धरती मेरा घर	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स से छपी है।
55	कब तक पुकारूँ	वही
56	प्रोफेसर	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स से छपी है।
57	कल्पना	वही
58	दायरें	यह पुस्तक हिन्दी पाकेट बुक्स प्रा.लि.से छपी है।
59	आग की प्यास	यह पुस्तक अशोक पाकेट बुक्स दिल्ली से छपी है। मुल सूची में `एपीबीडी` का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है।
60	होरेस काव्यकला `डी यु`	इस पुस्तक की पाण्डुलिपि श्रीमती सुलोचना राघव के पास है। `डी यु` का अर्थ स्पष्ट नहीं है।
61	के पी जे काव्यकला	के पी जे जयपुर के किसी प्रकाशक का नाम है, जिसका ठीक-ठीक विवरण प्राप्त नहीं हो सका है।
	एस.पी.	`एस.पी.` का ठीक-ठीक विवरण प्राप्त नहीं हो सका है किन्तु यह ज्ञात है कि मुलासार `एस.पी.` की प्रकाशन संस्थाएँ - सरस्वती प्रकाशन सदन आगरा से इनकी कुछ रचनाएँ प्रकाशित हुई है।
62	घरौन्दा	इसका प्रथम संस्करण सन 1996 में सरस्वती प्रेस बनारस से छपा है। बाद में यह राजपाल एण्ड सन्स,

		दिल्ली से छपा है।
63	तुलसीदास का कथाशिल्प	यह पुस्तक म.प्र.साहित्य प्रकाशन विलासपुर से सन 1959 में प्रकाशित हुई।
64	उबाल	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
65	विरुदक	यह पुस्तक साहित्य कार्यालय आगरा से छपी है।
66	कालविजय	वही
67	समुद्र के फेन	वही
68	पराया	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
69	राह के दीपक	वही
70	मेघावी	वही
71	पांचाली	वही
72	किरणें बुहारलों	यह सचित्र काव्यसंग्रह है। इसकी पाण्डुलिपि सुलोचना राघव के पास है।
73	युरोपीय कथाएँ	वही
74	एशियाई कथाएँ	वही
75	ईरानी कथाएँ	वही
76	फारसी कथाएँ	वही
77	फ्रेन्च कथाएँ	वही
78	हैलेनिक कथाएँ	वही
79	आयवन्ही	आयवन्ही - सर वाल्टर स्काट इस पुस्तक की पाण्डुलिपि सुलोचना राघव के पास है।
80	एण्टी गोने	एण्टी गोने ज्ञसोफोक्लिज

उपर्युक्त रचनाओं के साथ ही साथ रांगेय राघवजी ने अन्य भी रचनाएँ की है। उन्होंने करीब-करीब 150 रचनाएँ की है।

<u>प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध से सम्बन्धित कहानीसंग्रह</u> :-

डा.रांगेय राघव ने `मेरी प्रिय कहानियाँ` संकलन सहित कुल ग्यारह कहानी संग्रहों का संकलन किया है। अधिक जानकारी के लिए कहानी संग्रह रचनाओं का क्रम प्रकाशन वर्ष के आधार पर किया है।

<u>ग्यारह कहानी संग्रह</u> :-

1	साम्राज्य का वैभव	सन मई, 1947
2	समुद्र के फेन	सन 1947
3	देवदासी	सन 1949
4	जीवन के दाने	सन मार्च, 1949
5	अधूरी मुरत	सन 1949
6	अंगारे न बुझे	सन 1951
7	ऐयाश मुर्दे	सन 1953
8	इन्सान पैदा हुआ	सन 1957
9	पाँच गधे	सन 1960
10	एक छोड़ एक	सन 1963
11	मेरी प्रिय कहानियाँ	सन 1970 (प्र.सं.)

उपर्युक्त कहानी संग्रहों में सम्मिलीत सभी कहानियाँ `रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ` भाग -1 व 2 में संकलित है। इन दो किताबों का शोध कार्य के लिए उपयोग किया है।

रांगेय राघवकी अन्य रचनाएँ -

1. सृजनात्मक साहित्य -

1. काव्य

2. नाटक

3. निबंध

4. रिपोर्ताज

5. आलोचना

6. शोधग्रंथ

7. महान उपन्यास

8. प्राचीन विश्व कहानियाँ

9. अभिजित कृतियों का परिचय देनेवाली रचनाएँ।

10. अनुवाद

2. काव्य -

1. मेधावी

2. पिघलते पत्थर

3. किरणे बुहार की
4. अजेय खण्डहर
5. राह के दीपक
6. रूप की छाया
7. पंचशिखा
8. पांचाली
9. श्यामली
10. बंधन मुक्ता
11. काव्य कलश
12. वियजिनी
13. मिटते चिह्न
14. आर्या
15. उत्तरायण
16. यात्रा के फल
17. मृत्युंजय

3. <u>उपन्यास</u> -

1. घरौन्दे
2. विषादमठ
3. मुर्दो का टीला
4. सीधा सादा रास्ता
5. चीवर
6. हुजूर
7. काका
8. अँधेरे के जुगनु
9. उबाल
10. देवकी का बेटा
11. यशोधरा जीत गई
12. लोई का ताना
13. रत्ना की बात
14. भारती का सपूत
15. बोलते खण्डहर
16. अँधेरे की भूल

17. प्रतिदान

18. बौने और घायल फूल

19. कब तक पुकारूँ

20. लखिमा की आँखे

21. बंदूक और बीन

22. राई और पर्वत

23. पक्षी और आकाश

24. राह न ढकी

25. जब आवेगी काली घटा

26. छोटी सी बात

27. धूनी का धुआँ

28. पथ का पाप

29. महायात्रा : अंधेरा रास्ता

30. महायात्रा : रैन और चन्दा

31. मेरी भव बाधा हरो

32. धरती मेरा घर

33. दायरे

34. आग की प्यास

35. कल्पना

36. आँधी की नावें

37. पतझर

38. प्रोफेसर

39. पराया

40. आखिरी आवाज

4. नाटक -

1. इन्द्रधनुष्य (एकांकी संग्रह)
2. स्वर्ग भूमि का यात्री
3. विरूदक
4. रामानुज
5. आखिरी धब्बा

5. निबंध -

1. संगम और संघर्ष
2. कालविजय

6. <u>रिपोर्ताज</u> -

1. तूफानों के बीच

7. <u>आलोचना</u> -

1. आधुनिक हिंदी कविता में प्रेम और शृंगार।
2. आधुनिक हिंदी कविता में विषय और शैली।
3. काव्य : कला और शास्त्र।
4. काव्य : यथार्थ और शास्त्र।
5. काव्य के मुल विवेच्य।
6. समीक्षा और आदर्श।
7. चंद्रावली नाटिका।
8. महाकाव्य विवेचन।
9. भारतीय संत परंपरा और समाज।
10. भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका।
11. हिंदी साहित्य की धार्मिक और सामाजिक पूर्वपीठिका।
12. तुलसीदास का कथाशिल्प।

8. <u>शोध-प्रबंध</u>-

1. गोरखनाथ (गोरखनाथ और उनका युग)

9 महान उपन्यास-

1. संसार और महान उपन्यास

10. प्राचीन विश्व कहानियाँ-

कुल मिलाकर 13 प्राचीन विश्वकहानियाँ रांगेय राघवजी ने लिखि है।

11.अनुवाद-

उन्होंने संस्कृत के अभिजात कृतियों का तथा अंग्रेजी के अभिजात कृतियों का अनुवाद किया है। उन्होंने अन्य रचनाओं के भी अनुवाद किए है।

पुरस्कृत रचनाएँ-

1. मेधावी-हिन्दुस्तानी साहित्य अकादमी।
2. प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास - डालमियाँ पुरस्कार।
3. कब तक पुकारूँ- उत्तर प्रदेश शासन।
4. पक्षी और आकाश-उत्तर प्रदेश शासन।
5. मेरी प्रिय कहानियाँ-राजस्तान साहित्य अकादमी।

डा. रांगेय राघव के समग्र रचनाओं के संदर्भ में निम्नप्रकार का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जा सकता है-

अ)

1. प्रकाशित रचनाएँ	= 122
2. अप्रकाशित रचनाएँ	= 28
कुल	= 150

ब)

1. साहित्य से संबंधित रचनाएँ	=143
(अनुदित रचनाएँ छोड़कर)	(= 30)
2. अनुदित रचनाएँ	= 7
कुल	= 150

क)

सहयोगी रचना	= 1
	151

डॉ. रांगेय राघवजी ने हिंदी भाषा और साहित्य की वृद्धि की। उनकी सेवा को देखकर और प्रभावित होकर, राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, वर्धा (महाराष्ट्र) ने उन्हें सन 1966 में मरणोपरान्त `महात्मा गांधी पुरस्कार` से पुरस्कृत किया। यह पुरस्कार अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन बारहवाँ अधिवेशन, औरंगाबाद (मराठवाडा) में प्रदान किया गया। उस पुरस्कार का स्वीकार श्रीमती सुलोचना राघव ने किया।

निष्कर्ष :-

डा. रांगेय राघव हिंदी के उन प्रतिभाशाली लेखकों में से थे जिन्होंने साहित्य के विविध अंगों की समृद्धि के लिए अपनी कुशल लेखनी से अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का सृजन किया। डा. रांगेय राघव के पूर्वज मूलत: तिरूपति (आन्ध्र प्रदेश) के निवासी थे। वहाँ से वे मथुरा आए। जयपुर के महाराज ने उन्हें `वैर की जागीर दे दी और यहीं वे बस गए। यह अय्यंगार ब्राह्मण कुल धर्म प्रवर्तक श्री रामानुजाचार्य की वंश परंपरा से संबंधित है। उनका परिवार धार्मिक होने के कारण धर्म का प्रभाव उनपर

पड़ा था। उनके माता-पिता सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत होने के कारण इनका प्रभाव रांगेय राघव पर पड़ा हुआ दिखाई देता है। साहित्य के अतिरिक्त चित्रकला, संगीत और इतिहास पुरातत्व में उन्हें रूचि थी। उनका व्यक्तित्व विभिन्न पहलूओं से भरा है।

सन 1948 में आगरा विश्वविद्यालय से पीएच. डी.की उपाधि प्राप्तकरने पर भी उन्होंने नौकरी न करके अध्ययन एवं लेखन को ही अपना जीवन समर्पित कर दिया।

व्यक्तित्व का प्रभाव अनजाने ही साहित्यकार की रचनाओं पर पड़ जाता है। उसी प्रकार रांगेय राघव के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके कृतित्व पर दिखाई देता है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, काव्य, नाटक, निबंध, रिपोर्ताज, आलोचना, समाजशास्त्र, इतिहास, विज्ञानपर,अनुवाद, अभिजात कृतियों का साहित्यगत परिचय देनेवाली रचनाएँ आदि अनेक प्रकार की पुस्तकें लिखि है।

मूलत: दाक्षिणात्य होते हुए भी उन्होंने जिस जागरूक प्रतिभा, योग्यता तथा कुशलता से हिंदी साहित्य में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया है, वह इतिहास के पन्नों में दर्ज है।

****